पुष्प उत्पादन में महिलाओं की भूमिका व रोजगार के अवसर

मस्त राम धीमान एवं चन्द्र प्रकाश
भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कटराईं,
कुल्लू घाटी(हि0 प्र0)–175129.
mrarjun01@yahoo.co.in

पूरे विश्व की आधी जनसंख्या महिलाओं की है तथा प्राचीन काल से ही नारी का योगदान, अनाज, फल–फूल, सब्जियां उगाने तथा भण्डारण एवं संरक्षण में सराहनीय रहा है। हमारे देश में पूरे परिवार के लिए भोजन प्रबंध, पोषण, रखरखाव व भण्डारण की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर ही होती है। यदि घर की महिला थोड़ी जागरूक हो तो वह भोजन को संतुलित करके पूरे परिवार के पोषण स्तर को ठीक रख सकती है और भोजन में विविधता लाकर उसे आकर्षक बना सकती है। अनाज, दालों, सब्जियों के अतिरिक्त आजकल पुष्प उद्योग भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जिसमें महिलाओं के लिए रोजगार की आपार संभावनाएं हैं। फल एवं सब्जियों की तरह कटाई एवं तुड़ाई के बाद फूल भी शीघ्र खराब हो जाते हैं। फूलों का परिरक्षण घर में, छोटे एवं बड़े स्तर पर भी किया जा सकता है। यदि थोड़ी बहुत पढ़ी लिखी नौजवान महिलायें इस ओर जागरूक हो जाएं तो वे फूलों में मूल्य–संवर्धन करके इनकी गुणवत्ता को बनाए रख सकती हैं। काम से हमें व्यक्तित्व और जीने के लिए धन कमाने का गौरव प्राप्त होता है। पुष्पोत्पादन महिलाओं की आय में वृद्धि, उनके अधिकार व आत्मनिर्वाह का अवसर देता है। आजकल फूलों की खेती एक महत्वपूर्ण कृषि–व्यवसाय बन गया है जो कि ग्रामीण और शहर से लगते इलाकों में रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान कर रहा है। जिन इलाकों में पहले से ही महिलायें इस व्यवसाय से जुड़ी हैं वो पुष्पोत्पादन की आधुनिक तकनीकी को अपनाकर अपनी आय को और बढ़ा सकती हैं।

श्रमिकों की उपलब्धता तथा अनुकूल जलवायु ही भारत को अंतर्राष्ट्रीय पुष्प बाजार में आगे ले जाने के लिए अपेक्षाकृत लाभ व अहम भूमिका निभाता है। अन्य विकसित देशों की एक सूचना व सांख्यिकी के अनुसार पुष्पोत्पादन लगभग 20 मजदूरों को प्रति हैक्टर सीधा रोजगार प्रदान करता है। इसके अलावा अन्य रोजगार के साधन भी बहुत हैं जैसे प्लास्टिक व मिट्टी के गमले बनाना, पोलीहाउस के लिए प्लास्टिक सीट बनाना, कागज, फूलों को पैकिंग के लिए कार्टन बनाना, लम्बर, कृषि–दवाईयां, परिवहन या पुष्प विपणन के लिए शीत वाहन का आयोजन तथा अन्य सेवाओं में 1:2 का अनुपात है। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि आधुनिक पुष्पोत्पादन व्यवसाय लाखों नौजवान पढ़ी लिखी महिलाओं को अच्छा रोजगार प्रदान कर सकता है जो कि सार्थक रूप से राष्ट्रीय आर्थिक वृद्धि में योगदान होगा।

पुष्पोत्पादन में महिला मजदूरों का लगभग 7 प्रतिशत हिस्सा है। प्रारम्भ से ही महिलाओं का कृषि सम्बंधित कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । महिलाओं को पुष्पोत्पादन में वरीयता इस तर्क पर भी दी जाती है क्योंकि पुष्प उत्पादन एक छोटे बच्चे की देखभाल की तरह है जहाँ पर महिला उसकी वृद्धि व विकास के लिए पूरी तरह जिम्मेवार होती है।

पुष्पोत्पादन में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर व महिला सशक्तीकरण :

फूल उगाने और इन्हें बेचने के अलावा महिलायें ग्रामीण स्तर पर समूह बनाकर या फिर एक दुकान खोलकर जहाँ पर फूलों में मूल्य–संवर्धन कर के जैसे मालाऐं बनाना, रीथ, वैनी, बुक्के, गजरा या फूलों को सुखा कर बड़ी आसानी से इस व्यवसाय को अपना सकती हैं। महिलाओं को इस विकल्प से जोड़ने व महिला सशक्तीकरण के लिए निम्न प्रणालियों में बदलाव की जरूरत है जैसे–

क. महिलाओं की गतिशीलता और सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं में बदलाव।
ख. महिलाओं की मजदूरी के आधार में बदलाव ।
ग. महिलाओं के अभिगमन और सम्पति के अपर नियंत्रण में बदलाव।
घ. महिलाओं के फैसला लेने के अपर नियंत्रण में बदलाव ।

पुष्प उत्पादन में महिलाओं का सशक्तीकरण :

अगर महिलाओं को पुष्प उद्योग से जोड़ना है और इस उद्योग में वृद्धि करनी है तो विभिन्न स्तर पर बदलाव की बहुत जरूरत है–

अनुसंधान(विज्ञान शोध पत्रिका) खण्ड 1, अंक 1, अक्टूबर 2013 (आई.एस.एस.एन. : 2322-0708)

1. नीति के स्तर पर
2. कृषि भूमि विस्तार के स्तर पर
3. महिला किसान के स्तर पर

अगर हम नीति के स्तर पर बदलाव की बात करते हैं तो यह एक अच्छा विचार होगा कि जिन किसान महिलाओं के नाम अपनी जमीन है उन्हें सस्ता कृषि ऋण उपलब्ध करवाया जाये। कृषि भूमि विस्तार में महिलाओं को संरक्षित खेती के बारे में जानकारी दी जाए और बहुत सी महिला प्रसार कार्यकर्ताओं की जरूरत है जो महिलाओं को फूलों की आधुनिक खेती, रखरखाव, विपणन इत्यादि के बारे में जानकारी व सूचना प्रदान करें। यहां पर यह भी आवश्यक है कि महिलाओं के लिए ज्ञान व अनुभवी प्रशिक्षण का आयोजन भी किया जाए जो केवल ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के लिए ही हो या फिर महिलाओं को किसी घर के सदस्य के साथ किसी आदर्श पुष्प उत्पादन केन्द्र पर प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जाय जहाँ पर निम्न बातें बताई जाएं।

1. पुष्प उद्योग को एक व्यवयाय के रूप में अपनाना।
2. प्रजाति, जलवायु, क्षेत्र के बारे में ज्ञान व पहचान ।
3. बीज उत्पादन, कन्द व अन्य पौधों का चुनाव व रखरखाव।
4. मुख्य कीट, बीमारियों की पहचान, लक्षण व उनकी रोकथाम।
5. फूलों का कटाई उपरांत रख रखाव, मूल्य संवर्धन और विपणन।
6. पुष्प मंड़ी के लिए संवेदनशील सुझाव ।
7. साधारण हिसाब किताब की व्यवस्था ।

पुष्प क्षेत्र में पुष्प उत्पादक महिलाओं के लिए प्रसार संयोजन बहुत कमजोर या फिर बिल्कुल भी नहीं है। परन्तु भारत सरकार ने आदर्श पुष्प उत्पादन केन्द्र खोल कर इस ओर एक महत्वपूर्ण शुरूआत की है। फिर भी निचले स्तर पर महिला प्रसार कार्यकर्ता बिल्कुल नहीं है। इसके परिणाम स्वरूप महिला पुष्प उत्पादक किसानों की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जब तक महिला पुष्प उत्पादकों के लिए कोई खास प्रयत्न नहीं किये जायेंगे तब तक वो इस क्षेत्र में व्यावसायिक खेती करने के लिए मिलने वाली सुविधाओं का लाभ पाने में पीछे रह जाएंगी। आधुनिक पुष्प उत्पादन के बारे में महिलाओं को प्रशिक्षण देने के अलावा यह भी जरूरी है कि उन्हें आपस में इकट्ठे व्यवसाय और संगठन की निपुणता को विकसित करने के लिए कुछ सहायता भी मुहैया करवाई जाए।

यदि ग्रामीण स्तर पर नौजवान लड़कियों के लिए शिक्षा प्रणाली में व्यवसायिक पुष्प उत्पादन विषय शामिल किया जाए तो यह अत्यधिक मददगार होगा। यदि उपयोगी प्रायोगिक शिक्षा स्कूली स्तर पर लड़कियों के लिए शामिल की जाए तो यह उनकी समाजिक और आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ करेगी। प्रायः यह महसूस किया जाता है कि सीमांत या छोटे किसान खासकर महिलाएं, जब किसी समूह में इकट्ठी होती हैं तो वो अपने आप को सशक्त महसूस करती है। एक समूह के सदस्य होने के नाते वे उन सब मूलभूत सुविधाओं को लेने की अच्छी स्थिति में होती हैं जो एक संगठन को सही तरीके से चलाने के लिए दी जाती हैं। पुष्प क्षेत्र में इन अवसरों को प्राप्त करने के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि महिलाएं 15–20 के समूह में ग्रामीण या खंड स्तर पर किसी प्रसार शाखा या उस क्षेत्र में काम कर रहे एन0जी0ओ0 की सहायता से एक स्वयंसेवक समूह बनाऐं। इस तरह के स्वयं सेवक संगठन आर्थिक सहायताओं व सस्ते ऋणों को लेने की अच्छी स्थिति में होती हैं जो छोटे स्तर पर पुष्प उत्पादक किसानों को दिये जाते हैं । अगर व्यवसायिक प्रेरणा के साथ – साथ तकनीकी प्रशिक्षण व समूह के अनुभव को भी मजबूत किया जाए तो महिलाएं पुष्प उत्पादन को एक स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में अपना सकती हैं और अच्छा धन कमा सकती हैं।

पुष्प उत्पादन को बढाने के लिए सरकार के उपक्रम व नीतियां

पुष्पोत्पादन से अच्छी आमदनी, रोजगार के अवसर, महिला किसानों की भागीदारी और निर्यात में बढ़ोत्तरी को देखते हुए भारत सरकार ने इसे एक महत्वपूर्ण क्षेत्र घोषित किया है और इसकी वृद्धि के लिए बहुत सी योजनाएं चलाई हैं। फिर भी यहां पर महिलाओं की ओर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है ताकि इन योजनाओं का लाभ महिलाएं भी उठा सकें अगर संभव हो तो यह नियम बना देना चाहिए कि 30 प्रतिशत लाभ केवल महिला किसानों को दिया जाए।

पुष्पोत्पादन में विविधीकरण से रोजगार की संभावनाएं

1. पारंपरिक फूलों की खेती

आजकल घरेलू बाजार में खुले फूलों जैसे गेंदा, एस्टर, करोसैंडरा, गुलाब, रजनीगंधा, गुलदाउदी इत्यादि की मांग दिन–प्रतिदिन बड़ी तेजी से बढ़ रही है। भारत में फूलों की खेती के अंर्तगत लगभग 1,90,000 हैक्टेयर क्षेत्रफल है जिसमें से 90 प्रतिशत भाग खुले फूलों के अंतर्गत आता है। महिलाएं जिनके पास अपनी जमीन है या फिर वो किराये पर जमीन लेकर इन फूलों की खेती बड़ी आसानी से कर सकती हैं और अपनी आमदनी को बढ़ा सकती हैं। महिलाएं इन फूलों को खुले बाजार में मालाएं बना कर, बुक्के बनाकर या रीथ, गजरा या फलावर अरेन्जमेंट कर के या फिर ऐसे ही मंदिर में चढ़ाने के लिए बेच सकती हैं।

2. मूल्य प्रभावी ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी

मूल्य प्रभावी ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी छोटे स्तर के किसानों खासकर सामान्य महिलाओं के लिए विस्यमकारी अवसर प्रदान करती है। पारंपरिक पुष्प उत्पादक परिवारों में महिलाएं खेत में फूल उगाने में अत्यधिक योगदान देती हैं । महिलाएं रोपाई, निराई–गुड़ाई, सिंचाई, कटाई और फूलों को विपणन के लिए पैक करने तक सभी सस्य क्रियाएं करती हैं । महिलाएं खुले में फूल उगाने में बहुत पहले से ही सहयोगी रही हैं उनके लिए ग्रीन हाउस में फूलों की प्रौद्योगिकी एक वरदान के बराबर है। छोटे स्तर पर ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी इनके लिए अधिक लाभप्रद है क्योंकि यह 500 वर्ग मीटर क्षेत्र में बड़ी आसानी से की जा सकती है। यह इसलिए भी लाभप्रद है क्योंकि हमारे देश में बहुत सी महिलाएं घर का काम करती है और जमीन बहुत कम है जिस कारण इस पर पारंपरिक खेती करना अधिक रूप से उपयोगी नहीं है। परन्तु छोटे स्तर पर संरक्षित फूलों की खेती आर्थिक रूप से लाभप्रद है और महिलाओं की गरीबी को दूर करने में सक्षम होगी।

3. शुष्क पुष्प उत्पादन

यदि हम भारत से पुष्प उत्पादों के निर्यात के पिछले कुछ वर्षों की सांख्यिकी को देखें तो पता चलता है कि पुष्प उत्पादों के कुल निर्यात में करीब दो–तिहाई भागीदारी शुष्क पुष्प उत्पादों की है। इसलिए फूलों का उचित प्रयोग करने व इन्हें खराब होने से बचाने में महिलाएं बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान के साथ–साथ विभिन्न प्रकार से इनमें मूल्य–संर्वधन करके इनकी उपयोगिता बढ़ा सकती हैं। लघु एवं गृह उद्योग के रूप में इस कार्य को करके महिलाएं अच्छा धन अर्जित कर सकती हैं। शुष्क पुष्प उत्पादन के लिए जंगली फूल या पौधों की टहनियां या पत्तों को इकट्ठा किया जाता है या फिर कुछ फूल जैसे डहेलिया, गेंदा, पैन्जी, स्टैटिस, लार्कस्पर, हेलिकरइसिम, रोज हिप, कमल के फूल की डांडी इत्यादि को शुष्क फूलों के लिए बोया जाता है। कुछ फूलों को सुखाने की विधियों का विवरण सारणी 1 में दिया गया है । नमी निष्कासन के सिद्धांत पर पुष्प–पादप परिरक्षण की विभिन्न विधियां विकसित हुई हैं जो इस प्रकार हैं–

1. वायु शुष्कन विधि ।
2. अन्तः स्थापित विधि ।
3. धूप शुष्कन विधि ।
4. बंद चूल्हा गर्म हवा शुष्कन विधि ।
5. सूक्ष्म तरंगी बंद चूल्हा शुष्कन विधि ।
6. दबाव शुष्कन विधि ।
7. सिलिका जैल शुष्कन विधि ।
8. बर्फ बनाकर सुखाने की विधि ।
9. ग्लिसरीन शुष्कन विधि ।
10. ठॉचा रूप में शुष्कन विधि ।
11. निर्वात शुष्कन विधि ।

शुष्क पुष्पों से विभिन्न आकृतियां बनाना

शुष्क पुष्पों से विभिन्न आकृतियां बनाई जा सकती हैं जैसे ग्रीटिंग कार्ड, वैडिंग कार्ड, वॉल सीनरीज, टेबल सीनरीज, टेबल टॉप, वॉल हैंगिग, सैज, फ्लावर अरेन्जमेन्ट, फ्लावर पौट, पौटपौरी, पोमेन्डर इत्यादि।

सारिणी–1. शुष्क पुष्प उत्पादन के लिए उपयुक्त फूल व सुखाने की विधियां

कमांक	फूल का नाम	सुखाने की विधि
1	हेलिक्राइसम	हवा, दबाव षुष्कन
2	गोल्डन रोड	हवा, धूप शुष्कन
3	बोगेनविलिया	हवा, दबाव, बंद चूल्हा गर्म हवा शुष्कन
4	हाइड्रेन्जिया	हवा, धूप, दबाव,
5	गेंदा	हवा, दबाव, बंद चूल्हा गर्म हवा शुष्कन
6	स्टैटिस	हवा, धूप शुष्कन
7	गौम्फरिना	हवा, दबाव, अन्तःस्थापित शुष्कन
8	पैंजी	दबाव, बंद चूल्हा गर्म हवा शुष्कन
9	लार्कस्पर	हवा, दबाव, शूक्ष्मतरंगी बंद चूल्हा शुष्कन
10	गुलाब	सिलिका जैल, अन्तःस्थापित, शुक्ष्मतरंगी बंद चूल्हा शुष्कन
11	कारनेशन	अन्तःस्थापित, शूक्ष्मतरंगी बंद चूल्हा शुष्कन
12	डहेलिया	अन्तःस्थापित, शूक्ष्मतरंगी बंद चूल्हा शुष्कन
13	गुलदाउदी	बंद चूल्हा गर्म हवा, शूक्ष्मतरंगी बंद चूल्हा शुष्कन

4. पुष्प बीज उत्पादन

सफल पुष्प उत्पादन में बीज का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। गुणवत्तायुक्त बीजों की अनुपलब्धता पुष्प उत्पादन बढ़ाने तथा पुष्प उद्योग के प्रसार में मुख्य बाधा रही है। श्रमिकों की अनुपलब्धता तथा प्रतिकूल जलवायु के कारण अमेरिका, जापान, हालैंड तथा यूरोपीय देशों में बीज उत्पादन एक खर्चीला व्यवसाय है। इसलिए विकसित देशों की बीज कम्पनियां विकासशील देशों जैसे थाइलैंड, मलेशिया, भारत, ग्वाटेमाला, कीन्या आदि में बीज उत्पादन करवाती हैं। भारत में सस्ती मजदूरी, विविधतापूर्ण जलवायु की उपलब्धता के कारण विविध प्रकार के बीज उत्पादन की असीम सम्भावनाएं हैं। भारत वर्ष में जहाँ अनाज की फसलों का प्रति हैक्टेयर उत्पादन कम होता है, वहां बड़े पैमाने पर मौसमी फूलों का उत्पादन किया जा सकता है। मौसमी फूलों के प्रति लोगों में जागरूकता नहीं है। इस दिशा में जागरूकता लाई जाए तो देश के ग्रामीण इलाकों में लोगों के लिए रोजगार का सृजन होगा व उनकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी। किसी भी फूल के बीज उत्पादन में उन्नतशील प्रजातियों का चयन एक महत्वपूर्ण कारक है जिस पर गुणात्मक बीज उत्पादन निर्भर करता है। इसलिए बीज उत्पादन हेतु प्रजातियों का चुनाव करते समय कुछ विषेष सावधानियों की आवश्यकता होती है जैसे–प्रजाति जलवायु क्षेत्र के लिए उपयुक्त हो, अधिक उत्पादन क्षमता वाली हो, रोग व कीट रोधी तथा अगेती हो। किसान संकर बीज उत्पादन भी कर सकते हैं। संकर बीज उत्पादन के कई लाभ हैं जैसे संकर बीज अन्य बीजों की अपेक्षा मंहगा बिकता है। संकर बीज के उत्पादन में प्रयोग होने वाली निपुंसीकरण एवं परागण विधियों आदि में महिलाएं अधिक निपुण एवं कार्य कुशल हो सकती हैं यदि उन्हें इस क्षेत्र में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाये तो इससे महिलाओं के लिए रोजगार भी प्राप्त होगा। इसलिए महिला किसान बीज उत्पादन करके न केवल अपने लिए उत्तम बीज प्राप्त कर सकती हैं अन्यथा इन बीजों का विक्रय करके स्वयं को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बना सकती है।

5. अच्छी प्रजाति का पौध उत्पादन

भारत में अच्छी किस्म के पौधे व बीज न मिलने से पुष्प उद्योग पूरी क्षमता से नहीं पनप पाया है यही कारण है कि अभी तक किसान अच्छी किस्म की पौध सामग्री बाहरी देशों से आयात करता है जो बहुत महंगा मिलता है। फूलों की व्यवसायिक खेती व गुणवत्ता पूर्वक व अच्छी गुणवत्ता वाले फूल प्राप्त करने के लिए अच्छे बीज व सामग्री बहुत जरूरी है। अगर महिलाएं इस व्यवसाय की ओर जागरूक हो जाएं और उन्हें सही जानकारी व सूचना दी जाएं तो वो इस व्यवसाय को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकती हैं।

6. पॉट प्यूरी

यह एक विशेष प्रकार की शुष्क पुष्प सज्जा है जिसे सजावटी कार्य के लिये और कमरे को तरोताजा रखने के लिए किया जाता है । आमतौर पर पॉट प्यूरी में शुष्क, मीठी सुगंध वाले पुष्प शग होते हैं जिसमें फूल, पत्ते, बीज, टहनियां व जड़ों का प्रयोग भी किया जाता है। इस कार्य के लिए जो सामग्री प्रयोग में लाई जाती है वह अविषाक्त और छोटी–मोटी टूट–फूट को सहन करने योग्य होनी चाहिए । पॉट प्यूरी शुष्क व आर्द्र दो तरह की बनाई जा सकती है । दोनों के अन्दर फेवीकोल की जरूरत होती है, जो सुगन्धित तेलों को अपने अन्दर सोख ले और फिर धीरे–धीरे उन्हें छोड़ सके । फेवीकोल में बहुत महीन पीसा हुआ आयोडीनयुक्त नमक, आइरिस की जड़ें, क्लैमस की जड़ें, गम बेनजोआइन, स्टोरैक्स व अम्बर गरिस मिले होते हैं । ये पदार्थ महीन पीसे हुए होने चाहिए ताकि सुगन्धित तेल इसमें अच्छी तरह समाहित हो जाये । पॉट प्यूरी को बनाने के लिए सूखे फूलों के 2 से 3 प्याले जड़ व पत्तों के साथ, 2 से 3 बड़े चम्मच पीसी हुई दालचीनी, स्टार एनाइज व लौंग, 1/4 कप सूखा संतरा या लेमन के छिलके, 2 बड़े चम्मच फेवीकोल या गोंद और 5 या 6 बूँदें मौलिक तेल को आपस में अच्छी तरह मिला लें तो पॉट प्यूरी बन जाती है । स्थाई कर द्रव्यों को एसेंशियल आयल्स लगाकर मिलने दें और लगभग 3–4 हफ्तों तक रहने दें । फिर इसे फूलों, पत्तियों व शंकुओं इत्यादि से मिला दें। पॉट प्यूरी को शीषे के कटोरे या चीनी मिट्टी के जार या मलमल या फिर छोटी–छोटी सैटिन थैलियों में रुपांकन किया जा सकता है। पॉट प्यूरी में सुगन्ध देने वाले उपयुक्त पौधे हैं जैसे– वर्बीना, गुलाब, आर्टिमेजिया, थाइम, रोजमेरी, अचिलिया, लवैन्डर, सेन्टड जरेनियम, मिन्ट, फेनल इत्यादि। महिलाएं इस कार्य को अपने घर पर बड़ी आसानी से कर सकती हैं और अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकती हैं।

पारंपरिक समय में या फिर कहीं भी पुष्प उत्पादन में महिलाओं का सशक्तीकरण करना इतनी जल्दी आसान नही है। परन्तु अगर हम आज की बात करें तो इस तरह के बदलाव के उदाहरण हमें मिलते हैं, फिर भी महिलाओं को पुष्प उत्पादन में बढ़ावा देने के लिए महिलाएं समाजिक स्तर पर आपस में समूह बनाएं जो कि महिला सशक्तीकरण और इस उद्योग को आगे ले जाने में एक अहम भूमिका होगी।

संदर्भ

1. उपाध्याय, आर0 सी0(2008) एण्टरप्रेन्योरशिप अपारचुनिटीज फार वूमेन इन फ्लोरीकल्चर। प्रस्तुततीकरणः नेशनल सिम्पोजियम ऑन रीसेन्ट एडवांसेज इन फ्लोरीकल्चर, हेल्ड एट नवसारी एग्रीकल्चर यूनीवर्सिटी, नवसारी, मार्च 4.8, 2008, मु0 पृ0 75–80।
2. दत्ता, एस0 के0(1997) डिहाइड्रेशन ऑफ फ्लॉवर्स एण्ड फोइलेज एण्ड फ्लोरल क्राफ्ट, इकोनॉमिक बॉटनी इनफॉर्मेशन सर्विस, एन0 बी0 आर0 आई बुलेटिन, नं0 3, पृ0 20।
3. मानकर, डी0 एम0; शंभारकर, वाई0 बी0 एवं कविताखाडे(2013) रोल पर्फार्मेंस ऑफ फार्म वूमेन इंगेज्ड इन फ्लोरीकल्चर, कर्नाटक जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, खण्ड 26, अंक 1, मु0 पृ0 161–163।
4. लाल, रोशन तथा खुराना, अशोक(2011) जेंडर इश्यू : द रोल ऑफ वूमेन इन एग्रीकल्चर सेक्टर, जेनिथ इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ बिजिनेस इकोनॉमिक्स एण्ड मैनेजमेंट रिसर्च, खण्ड 1, अंक 1, मु0 पृ0 1–11।